

मानवता मात्र की सेवा (Service to the Humanity)

(रोटरी जिला 3053 की कान्फ्रेंस 'नवोदय' में
दिनांक 22.12.2013 को श्री आर सी लाहोटी, पूर्व मुख्य न्यायाधीश, का वक्तव्य)

.....

रोटरी जिला 3053 के रोटेरियन्स को मेरी हार्दिक बधाई। आप इस नवगठित नवोदित जिले के प्रथम रोटेरियन्स हैं। 'प्रथम' के रूप में आपका नाम इस जिले के इतिहास में उल्लेखित किया जायेगा। आपका कृतित्व और आपके सेवा प्रकल्प जो आप इस प्रथम वर्ष में करेंगे, जिन आदर्शों और परम्पराओं का पालन और रचना आप इस वर्ष करेंगे, वे आने वाले वर्षों में इस जिले के रोटेरियन्स के लिए पथ चिन्ह का महत्व रखते हैं। कदाचित् इसी दृष्टिकोण से गवर्नर रोटेरियन राठी ने आज की चर्चा के लिए यह विषय चुना है। गवर्नर रोटेरियन आर. एस. राठी मेरे अनन्य मित्र रहे हैं। इस जिले का प्रथम गवर्नर के रूप में चुने जाने एवम् नेतृत्व करने का अवसर उन्हें मिलने की स्वाभाविक रूप से सर्वाधिक प्रसन्नता मुझे है। उन्हें भी मेरी हार्दिक बधाई।

अपने विचारों को वाणी देने के पूर्व मैं वह व्यक्त करना चाहूंगा जो सभागार में मेरी आंखें देख रही हैं। बीते हुए कल, इस कान्फ्रेंस के शुभारंभ और बिजनेस सेशन में, अपने गवर्नर, पास्ट गवर्नर, पड़ोसी जिले के गवर्नर और रोटरी अन्तर्राष्ट्रीय के अध्यक्ष की प्रतिनिधि डॉ. साओवालाक रतनविच¹ के गहन गंभीर विचार सुने हैं। ये वे लोग हैं जो रोटरी के प्रागण में 'जले स्वयं बन गए ज्योति'। आपका कल का दिन बहुत व्यस्त रहा है। मुझे लग रहा था कि आज की सुबह कुछ ऐसे चेहरों से मुलाकात होगी जिन पर थकावट के चिन्ह नज़र आएंगे। इसके विपरीत आपके चेहरे उत्सुकता, उत्साह और कुछ कर गुज़रने के संकल्प से प्रदीप्त हैं। इसलिए मैं दो प्रकार की दुविधाओं से ग्रस्त हूँ। पहली दुविधा यह कि आपको क्या कहकर संबोधित करूँ। आपको 'परमार्थ पथ के पथिक' कहूँ या 'सेवा समर के सिपाही'। मेरी आंखें चाहती हैं कि आपको देखूँ और मुझे प्रदत्त आदेश का पालन करने के लिए मेरा दिल यह कहता है कि आपसे कुछ बातचीत करूँ, जो विषय मुझे दिया गया है उस पर। अस्तु, दूसरी दुविधा यह है कि—

तुमको देखूँ या बात करूँ तुमसे
आंख अपना मजा चाहे, जिगर अपना मजा चाहे।

'मानवता की सेवा'—विषय विस्तृत है। सेवा का क्षेत्र और सेवा के रूप अनेक हैं और असीम हैं। सीमित समय में चर्चा करने के लिए मैं प्रयास करूंगा कि विषय को 'रोटरी के माध्यम से सेवा' के इर्द गिर्द केन्द्रित रखूँ। सेवा क्या है? क्यों करनी चाहिए? सेवा के लिए रोटरी अन्तर्राष्ट्रीय का माध्यम क्यों चुना जाना चाहिए? — ऐसे कुछ प्रश्न हैं जिनका उत्तर खोजने का हम प्रयास करेंगे और इस परिणाम पर पहुंचेंगे कि मानवता की सेवा शाश्वत आनन्द का मार्ग है। सेवा में सेवक के व्यक्तित्व के असीम विकास की संभावनाएं छिपी हैं। भारतीय अध्यात्म के दृष्टिकोण से देखा जाए तो सेवा का मार्ग मुक्ति और मोक्ष का मार्ग है। सांसारिक दृष्टिकोण से सेवा में मनुष्य जीवन की सार्थकता है।

¹ Dr. Saowalak Ratanavich

विषय प्रवेश

खलीफा उमर, भक्ति साहित्य के पन्नों में दर्ज एक ऐसी शख्सीयत हैं जो पवित्र जीवन जीते थे और खुदा की इबादत (भगवत् भजन) में अपना जीवन बिताते थे। एक रात उन्होंने स्वप्न देखा कि एक फरिश्ता अपने हाथों में एक पोथी (मोटी पुस्तक) लिए हुए जा रहा है। जिज्ञासावश उन्होंने फरिश्ते से पूछा कि इस पोथी में क्या है? फरिश्ते ने उत्तर दिया— इस पुस्तक में उन लोगों के नाम लिखे हैं जो खुदा से प्रेम करते हैं। खलीफा उमर ने पुस्तक खोलकर देखी। उसमें अनेक पन्नों पर अनेक नाम लिखे हुए थे। वे देखना चाहते थे कि इन नामों में मेरा नाम भी कहीं है या नहीं? यह सोचकर कि इतने नामों में अपना नाम तलाशने में बहुत वक्त लगेगा उन्होंने पुस्तक फरिश्ते को लौटा दी। यह देखकर उन्हें दुःख हुआ कि ईश्वर से इतना प्रेम करने के बाद भी उनका नाम इस पुस्तक में लिखे ऊपर के नामों में नहीं है।

वे निराश नहीं हुए। उन्होंने विचार किया और मन ही मन संकल्प लिया कि वे आने वाले दिनों में खुदा की इबादत के अलावा खुदा के बन्दों की खिदमत में भी समय लगाया करेंगे। दुनिया में जितने इंसान हैं वे भी तो ईश्वर के बनाए हुए हैं और उनकी सेवा करना भी ईश्वर की पूजा के तुल्य ही है। वे विशेषकर दीन दुखियों को तलाशकर अपने हाथों से उनकी सेवा करने में काफी वक्त गुजारने लगे। धीरे-धीरे इसका समय बढ़ता गया और सेवा में उनका समर्पण भी।

कुछ समय बीत गया। एक रात उन्हें फिर ख़्वाब आया। इस बार फरिश्ते के हाथ में दो पुस्तकें थीं। एक मोटी पुस्तक और एक छोटी पुस्तक। खलीफा उमर ने पूछा कि इस छोटी पुस्तक में क्या है? फरिश्ते ने कहा— मोटी पुस्तक में उन लोगों के नाम दर्ज किए जाते हैं जो खुदा की इबादत करते हैं। और, छोटी पुस्तक में उन लोगों के नाम दर्ज हैं जिनकी इबादत खुदा करता है।

खलीफा उमर चकित हो गए। ऐसे कौन होंगे कि खुदा जिनकी इबादत करे? पूछा, तो फरिश्ते ने बताया — जो लोग सब में खुदा को देखते हैं, जिन्हें प्राणी मात्र में खुदा की परछाईं नज़र आती है वे खुदा की नज़र में सब इंसानों से ऊपर और बेहतर होते हैं।

उत्सुकतावश खलीफा उमर ने छोटी पुस्तक को खोलकर देखा। इस पुस्तक में उनका नाम सबसे ऊपर लिखा था।

सेवा का मार्ग कठिन

सेवा का मार्ग कठिन है। जयशंकर प्रसाद ने लिखा है— 'सेवा सबसे कठिन व्रत है'। रातचरितमानस में गोस्वामी तुलसीदास लिखते हैं — 'सेवाधर्म कठिन जग जाना'। मुझे विदित है कि आप सभी धर्मप्राण व्यक्ति हैं। और, अपने-अपने आराध्य का सेवा-पूजन और स्मरण करते हैं। फिर भी यदि आपने रोटरी की सदस्यता ली है, सेवा का संकल्प लिया है यह जानते हुए भी कि सेवा का मार्ग कठिन है तो यह निर्णय आपको करना है कि आप अपना नाम कौन सी पुस्तक में लिखवाना चाहते हैं। मानव मात्र की सेवा का भाव हृदय में तब प्रकट होता है जब हम 'वसुधैव

कुटुम्बकम्' के सूत्र में विश्वास करते हैं। संसार का प्रत्येक प्राणी ईश्वर की संतान है; हम सब भाई भाई हैं और इस नाते जो विपिन्न हैं, विकल हैं उनकी सेवा करना उनका कर्तव्य है जो सम्पन्न हैं और जिन पर ईश्वर ने विशेष कृपा कर विकलता से बचाया है।

कबीर ऐसे संत हुए हैं जिन पर हिन्दू और मुसलमान — दोनों ही समान रूप से श्रद्धा रखते थे। एक दिन वे भगवद् स्मरण कर रहे थे। तभी उनके एक भक्त ने उनसे पूछा— कबीर, आप नाम सुमिरण तो करते हैं पर आपके हाथ में माला तो है नहीं? कबीर प्रश्नकर्ता का भाव समझ गए। उन्होंने मौन होकर आंखें बंद कर लीं। उनके नेत्रों से अश्रु प्रवाहित होने लगे। बन्द नेत्रों में उनके आराध्य की छवि उतर आई। प्रश्न भक्त ने किया था उत्तर उन्होंने भगवान को दिया। बोले—

जहां में जितने इंसां हैं, तिरी माला के मनके हैं
नज़र में फिरते जाते हैं, इबादत होती जाती है।

यह है सर्वधर्म समभाव। सेवा के भाव की पराकाष्ठा। जब ऐसा लगने लगे कि प्राणी मात्र की सेवा भी भगवद् पूजा का एक माध्यम है और जिस माला से नाम सुमिरण किया जाता है उसी माला का एक दाना इंसान भी है।

सेवा क्या है?

सेवा क्या है? सेवा के अनेक रूप हो सकते हैं। किन्तु यह निश्चित है कि सेवा धर्म है और ऐसा धर्म जो सारे धर्मों से ऊपर है। मानस में लिखा है— 'परहित सरिस धर्म नहीं भाई'। किसी विकलांग को सड़क पार करा देना, पीड़ित व्यक्ति की आंखों से आंसू पोंछकर सहानुभूति के दो शब्द कह देना भी सेवा है। ऐसा कार्यों में कुछ भी नहीं लगता। दूसरी ओर धर्मशाला बनाना, अस्पताल खोलना, स्वास्थ्य शिविर लगाना, पोलियो उन्मूलन और अंधत्व निवारण का संकल्प लेकर उसे साकार कर देना भी सेवा है। महाभारत में भगवान वेद व्यास लिखते हैं कि रोग से पीड़ित व्यक्ति के लिए शय्या, थके हुए को बैठने के लिए आसन, प्यासे को पानी और भूखे को भोजन की व्यवस्था करना शिष्टाचार है, मानवीय कर्तव्य का पालन है और सेवा भी है। इन्हीं के पालन से मनुष्य और पशु में विभेद होता है।

सुसंस्कृत व्यक्ति सेवा का सृजन करता है। सेवा का वाह्य रूप देश, काल और परिस्थिति पर निर्भर करता है। वही कर्म सेवाकर्म है जो इस त्रिमुखी कसौटी पर खरा उतरे:— (i) जिसका ध्येय व्यापक लोक—कल्याण हो। 'बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय'। (ii) जिसमें स्वार्थ का अंश लवलेश मात्र भी न हो। (iii) जिससे व्यक्तित्व का उदात्तीकरण होता हो।

रोटरी और भारत

भारत में रोटरी ने एक सेवा संस्था के रूप में जिस प्रकार पैर पसारे हैं या अधिक उपयुक्त होगा यह कहना कि भारत में रोटरी का अन्तर्राष्ट्रीय सेवा संस्था के रूप में जैसा स्वागत हुआ है वह अतुल्य है। एक मोटी जानकारी के अनुसार विश्वभर में 33 हजार रोटरी क्लब हैं जिनमें से 3,700 केवल भारत में हैं। विश्व में रोटेरियन्स की संख्या 12,07,000 है जिनमें से 1,22,000 केवल भारत

में हैं। अर्थात् रोटरी के सम्पूर्ण विस्तार का 10 से 12 प्रतिशत अंश केवल भारत में है। भारतवर्ष की आबादी लगभग 120 करोड़ है जबकि यहां रोटेरियन्स की संख्या 1,22,000 है, अर्थात् प्रत्येक 10,000 व्यक्तियों में कम से कम एक व्यक्ति रोटरी का सदस्य है। रोटरी ने 'पोलियो मुक्त भारत' का प्रकल्प अपने हाथों में लिया और मुझे बताया गया है कि विश्व स्वास्थ्य संगठन² वर्ष 2014 में भारतवर्ष को पोलियो मुक्त देश घोषित करने जा रहा है। रोटरी ने भारत में अंधत्व निवारण का प्रकल्प लिया; लक्ष लक्ष लोगों की आंखों की रोशनी लौटाई और उन्हें मोतियाबिंद और कालियाबिंद से छुटकारा दिलाया। रोटरी की अब अतिमहत्त्वकांक्षी योजना है भारत को 'सौ प्रतिशत शिक्षित भारत' बनाने की।

9.11.2013 को मुम्बई में हुए आतंकवादी हमले की वार्षिकी के दिन अनेक क्लबों के रोटेरियन्स पूना स्थित दादा वासवानी के आध्यात्मिक केंद्र में उनसे भेंट करने गए और कुछ समय उनके साथ व्यतीत किया। दादा वासवानी एक सिद्ध संत हैं। उन्होंने अपनी संक्षिप्त चर्चा में रोटरी को पिछले 150 वर्षों में सर्वाधिक सशक्त सेवोन्मुख आंदोलन बताया। और, रोटरी के संस्थापक पॉल हैरिस का आदरपूर्वक स्मरण किया। उन्होंने कहा कि हम सभी आनन्द की खोज में संलग्न हैं। आनन्द की प्राप्ति का बेहतरीन उपाय सेवा के माध्यम से सर्वत्र शांति की स्थापना करना है।³

प्रश्न उठता है कि भारत और भारतवासियों के मन में रोटरी के प्रति इतना आदर क्यों है? रोटरी का विस्तार भारत की भूमि पर होने के प्रति स्वीकार्यता का भाव क्यों है?

मेरे विनम्र मत में, भारतीय आध्यात्मिक दर्शन और भारतीय संस्कृति-संस्कार जनित सेवा के सूत्रों और रोटरी-सेवा के आधारभूत सिद्धांतों में समानता और तादात्म्य है। रोटरी अन्तर्राष्ट्रीय के तत्कालीन भारतीय अध्यक्ष श्री राजा साबू के वक्तव्यों का संकलन दो खंडों में 'Look Beyond Yourself' शीर्षक से प्रकाशित हुआ है। मैं विश्वास के साथ आपसे यह अनुरोध कर सकता हूं कि प्रत्येक व्यक्ति जो अपने में सेवाभावी नेतृत्व की क्षमता का विकास करना चाहता है और प्रत्येक रोटेरियन जो एक 'अच्छा रोटेरियन' होना चाहता है उसे यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिए। उसमें निहित सामग्री रोचक है और प्रेरक भी। इस पुस्तक की प्रस्तावना भारत के पूर्व प्रधानमंत्री श्री इन्द्र कुमार गुजराल ने लिखी है। अपनी प्रस्तावना में वे लिखते हैं कि रोटरी प्रत्येक व्यक्ति को जीवन जीने के आदर्श उद्देश्य से अनुप्राणित करती है..... रोटरी अपनी ओर इसलिए खींचती है कि रोटरी की सदस्यता से जीवन सार्थक लगने लगता है, जीवन जीने की उपयोगिता नज़र आने लगती है क्योंकि वे जान जाते हैं कि रोटरी के माध्यम से अगणित व्यक्तियों के जीवन में आशा का संचार करने की क्षमता उनमें है.... रोटरी सर्वश्रेष्ठ सेवा संस्था है।⁴

रोटरी का चतुर्विध परीक्षण (Four Way Test) ही ले लीजिए। हमारे विचार, वाणी और कर्म (of the things we think, say or do) की चतुर्मुखी कसौटी। बहुधा रोटरी क्लबों की प्रत्येक

² World Health Organisation (WHO)

³ (E&W Series, Dec' 13, p.45)

⁴ (Rotary gives a person, a noble purpose of his or her life... So many people have been attracted to Rotary and once they have become members they find in Rotary a way to a more meaningful life, as they discovered their potential to bring hope to a vast section of people... No other service organisation is doing better)

सभा में इसका पाठ नियमित रूप से होता है, सभा के प्रारम्भ में – एक प्रार्थना या संकल्प के उद्घोष के रूप में। श्रीमद्भगवद् गीता पर प्रवचन करते हुए रामकृष्ण मिशन के स्वामी आत्मानन्द कहते हैं कि गीता के अनुसार—

“हर मनुष्य में तीन प्रकार की शक्तियां होती हैं। एक है विचार की शक्ति, दूसरी है भावना की और तीसरी है क्रिया की। विचार की शक्ति के द्वारा मनुष्य तर्क और चिन्तन करता है। भावना की शक्ति के सहारे वह स्नेह और प्यार करता है और क्रिया की शक्ति के माध्यम से वह कर्म करता है। या यों कह सकते हैं कि विचारशक्ति से वह *जानता* है, भावनाशक्ति से वह *मानता* है और क्रियाशक्ति से वह *करता* है। प्रत्येक व्यक्ति में इन तीनों शक्तियों में से किसी एक की प्रधानता होती है। जिसमें विचारशक्ति प्रधान है, वह ज्ञान—पथ की प्रधानता होती है। जिसमें विचारशक्ति है, वह प्रेम का मार्ग अपनाता है और जिसमें क्रियाशक्ति का बाहुल्य है, उसे कर्म की राह पसन्द आती है। जब हम इन तीनों शक्तियों को ईश्वाराभिमुखी कर देते हैं, तो पहला व्यक्ति *ज्ञानयोगी* हो जाता है, दूसरा *भक्तियोगी* और तीसरा *कर्मयोगी*।”

उक्त उद्धरण में हम ‘भावना’ को ‘अभिव्यक्ति’ के साथ जोड़कर पढ़ेंगे ; भावना की शक्ति अर्थात् भावाभिव्यक्ति की शक्ति। रोटरी के चतुर्विद परीक्षण में इन तीनों योगों का समन्वय है।

विष्णु पुराण (जो आज से लगभग दो हजार वर्ष पूर्व लिखा गया होगा) में एक श्लोक (3/12/45) आता है—

प्राणीनामुपकाराय यथै वैह परत्र च
कर्मणा मनसा वाचा, तदैव मतिमान भजेत।

भावार्थ है कि प्राणियों का उपकार करने के लिए जो कुछ इस लोक और परलोक में हो, उसे ही सुधीजन मन, वाणी और कर्म से करें।

विचार मन में आते हैं। मन ही विचारों का जन्म स्थान है। मुझे तो प्रतीत होता है कि चतुर्विद परीक्षण के शीर्ष—वाक्य में प्रयुक्त ‘विचार, वाणी और कर्म’ शब्दों का श्रोत श्रीमद्भगवद् गीता और विष्णुपुराण हैं।

रोटरी सेवा का आधारसूत्र है— **Service Above Self**. सेवा स्वयं से ऊपर। ‘सेवा स्वतः गरीयसी’, यह उपनिषद् का सूत्र है।

रोटरी अन्तर्राष्ट्रीय का प्रत्येक अध्यक्ष अपने कार्यकाल के लिए एक नारा देता है। यह नारा उसके कार्यकाल का ‘फलैगशिप’ अथवा दिशादर्शक यंत्र होता है। यह नारा उसके कार्यकाल में उसे स्वयं को और सम्पूर्ण रोटरी जगत को प्रेरणा देता है और मार्गदर्शन कर दिशा निर्देश देता है। इन नारों की एक लम्बी सूची है। आज की चर्चा के लिए मैं केवल तीन नारे चुन रहा हूँ। रोटरी अन्तर्राष्ट्रीय के अब तक तीन भारतीय अध्यक्ष हुए हैं। उन्होंने जो नारे दिए वे इस प्रकार हैं—

नीतिश लाहिरी	Kindle the Spark Within	अपनी अर्न्तज्योति जाग्रत करो।
राजा साबू	Look Beyond Yourself	अपने से परे देखो।

Kindle the Spark Within- भगवान बुद्ध महाप्रयाण के लिए तत्पर हुए। उनके शिष्य विचलित और शोक संतप्त हो गए। उनके परमप्रिय शिष्य आनन्द ने पूछा— भगवन् आपके अभाव में हमारा मार्गदर्शन कौन करेगा, कौन हमें अंधियारे में हमारी राह दिखाएगा? बुद्ध ने कहा— अप्प दीपो भवः। अपना दीपक स्वयं बनो। तुम्हारे अपने प्रज्ज्वलित किए हुए दीपक का प्रकाश तुम्हारा मार्ग प्रशस्त करेगा।

मेरी प्रतीति है कि यह नारा **Kindle the Spark Within** 'अप्प दीपो भवः' ही है।

अपने से परे देखो। आइंस्टाइन ने कहा है— **Try not to become a man of success; rather try to become a man of values.** अपने जीवन में सफलता और समृद्धि का अर्जन तो बहुत लोग कर लेते हैं किन्तु बहुत थोड़े होते हैं जो अपने व्यक्तित्व को मानव मूल्यों से समृद्ध कर पाते हैं। उपनिषद् कहता है—'असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय, मृत्योर्मा अमृतं गमय'। असत् से सत् की ओर, अंधकार से प्रकाश की ओर, मृत्यु से अमृत की ओर की यात्रा वही कर सकता है जो अपने से परे देखता है।

हेनरी फोर्ड ने कहा है — **You can't build a reputation on what you are going to do.** यश का अर्जन केवल भविष्य की योजनाएं बनाने से नहीं होता; उनका क्रियान्वन करने से, आदर्शों को आचरण में अनूदित करने से होता है। बहुत से लोग केवल सोचते रहते हैं, कल्पनाओं के स्वप्न संसार में विचरण करने का आनन्द लेते रहते हैं।

बात तब की है जब मैंने कोई विदेश यात्रा नहीं की थी। मेरे एक मित्र अमेरिका से लौटकर आए। मैंने उनसे पूछा— मैं भी अमेरिका जाने की सोच रहा हूं, कितना खर्चा आता है? मित्र बोले— कुछ भी नहीं। मुझे आश्चर्य हुआ; अमेरिका की यात्रा और खर्चा कुछ भी नहीं; यह कैसे हो सकता है? पूछा तो मित्र बोले— खर्चा तो यात्रा करने में होता है; आप तो यात्रा करने की सोच रहे हैं; सोचने में कुछ भी खर्च नहीं होता।

अपने से परे देखने के लिए चिन्तन, संकल्प और समर्पण सभी कुछ चाहिए। तभी उपलब्धियां होती हैं। सबका कल्याण किया जाए तो बोनस में स्वयं का कल्याण भी होता है। लोक कल्याण एक ऐसा उद्योग है जिसका बायप्रोडक्ट आत्मकल्याण है। बायप्रोडक्ट बिना प्रयास के प्राप्त होता है पर उसकी भी कीमत होती है। इन्टरनेशनल असेंबली को संबोधित करते हुए राजा साबू ने एक उदाहरण दिया था। दीपावली के त्यौहार का। जब अनेक दीपक एकत्रित हो जाते हैं और प्रत्येक दीपक अपना प्रकाश अपने से परे फेंकता है तो प्रकाशपुंज तो निर्मित होता ही है, दीपक से दूर फैले हुए अंधकार पर विजय भी प्राप्त होती है, किंतु प्रत्येक दीपक के नीचे छिपे हुए अंधेरे का भी शमन हो जाता है। **Look Beyond Yourself** का श्रोत उपनिषद् और भारतीय सांस्कृतिक परंपरा है।

मानवता को आत्मसात करने के लिए अन्तर्यात्रा करो – कल्याण बनर्जी ने कहा था। गीता कहती है कि बाहरी कारणों से और बाहरी परिस्थितियों में परिवर्तन करने मात्र से मनुष्य को शांति नहीं मिला करती; परिवर्तन तो हमें भीतर में, आभ्यन्तर में करना होता है, तभी शांति मिलती है। एक मनुष्य का दूसरे मनुष्य को गले लगाना एक निरर्थक शारीरिक क्रिया मात्र हो सकती है, एक शिष्टाचार का निर्वाह मात्र हो सकता है किंतु कल्याण बनर्जी मानवता को आलिंगनबद्ध करने का संदेश जिस भाव से दे रहे हैं उस भाव की अनुभूति, उस भाव से साक्षात्कार केवल अन्तर्यात्रा करने से ही हो सकता है। उन के नारे का स्त्रोत भी भारतीय आध्यात्मिक दर्शन ही है।

सेवा और सम्मैत्री

रोटरी की कार्यपद्धति यह सिखाती है कि सेवा से भी पहले सम्मैत्री (Fellowship) का सृजन करो। रोटरी की सदस्यता प्राप्त हो जाने पर जब पहली पहली बार मेरा परिचय सम्मैत्री शब्द से हुआ तभी से मैं सोचता रहता था कि मैत्री और सम्मैत्री में अंतर क्या है। शनैः शनैः मुझे प्रतीति हुई कि सम्मैत्री एक समूह का सृजन करती है जिसमें समूह की वरीयता होती है, व्यक्ति गौण। सामूहिक सेवा में अहंकार को कोई स्थान नहीं मिलता क्यों कि सेवा का कार्य तो व्यक्ति ही करता है लेकिन श्रेय समूह को मिलता है। यह बात और है कि समूह में काम करने से सेवा की शक्ति और प्रभाव, मिलने वाला लाभ, बहुगुणित हो जाता है।

‘सम्मैत्री’ से उन लोगों के बीच मैत्री का आभास होता है जो सभी समान हैं। रोटेरियन्स के बीच न कोई छोटा होता है न कोई बड़ा। इसका कारण यह है कि रोटरी में प्रत्येक सदस्य स्थानीय समाज के एक वर्ग (क्लासीफिकेशन) का प्रतिनिधित्व करता है। सदस्यता के लिए स्थानीय समाज को अनेक सुपरिभाषित वर्गों में विभाजित किया जाता है और उस वर्ग के श्रेष्ठ और सफल व्यक्ति को उस वर्ग का प्रतिनिधित्व रोटरी क्लब में करने के लिए चुना जाकर सदस्यता के लिए आमंत्रण दिया जाता है। इस प्रकार रोटरी के सभी सदस्यों में समानता का एक सूत्र जो उन्हें परस्पर बाधता है वह है कि प्रत्येक रोटेरियन अपने वर्ग का सफल और श्रेष्ठ व्यक्ति है, इसलिए वह स्थानीय रोटरी क्लब का सदस्य है। सभी ‘श्रेष्ठ’ प्रतिनिधि हैं, इसलिए सभी ‘समान’ हैं।

एक अन्य अर्थ में, जब एक क्लब के सभी सदस्य चाहे छोटे हों, चाहे बड़े और उनके बीच चाहे जैसा भेद हो जब वे मिलजुल कर हाथ बंटा कर एक दूसरे के कंधे से कंधा मिलाकर निस्वार्थ भाव से सेवा के कार्य करते हैं तो उनका परस्पर भेद-विभेद समाप्त हो जाता है, समता का भाव जाग्रत हो जाता है और उनके बीच की ‘मैत्री’ उत्थापित होकर ‘सम्मैत्री’ का रूप ले लेती है।

सम्मैत्री का एक अर्थ और भी है; सम्मैत्री अर्थात् मैत्री की पराकाष्ठा, ऐसी मैत्री कि जिसके पश्चात् कुछ बच न रहे, सारी हदें टूट जाएं, स्वार्थ और ‘दुई’ (द्वैत) का भाव पूर्णतः समाप्त हो जाए। उसे कहते हैं सम्मैत्री। सम्मैत्री के रूप में प्रोन्नत मैत्री का भाव कुछ इस प्रकार अभिव्यक्त किया जा सकता है—

मिट्टी में मिला दे, जुदा मैं हो नहीं सकता
बस! इससे ज़ियादा तेरा मैं हो नहीं सकता।

सेवा में अभिनवता का प्रयोग

एक शब्द होता है सुधीजन। शाब्दिक अर्थ में 'सुधी' उसे कहते हैं जिसके विचार पवित्र होते हैं; जिसका विवेक निर्मल होता है। सेवा के क्षेत्र में 'सुधी' का भावार्थ है कि जो विवेकी तो है ही किन्तु कर्मशील भी है; अथवा, जो अपनी कर्मठता का प्रयोग विवेक के साथ करता है। आप सभी सुधीजन हैं। आप 'सेवा-सुधी' भी हो सकते हैं बल्कि होना चाहिए। सेवा के पारंपरिक रूप हैं। किन्तु, सेवाकर्म में अनूठापन भी लाया जा सकता है। दो तीन ताज़ा सजीव उदाहरण आपके विचारार्थ आपके समक्ष रखता हूँ।

अभिषेक चक्रवर्ती। टाटा कंसलटेंसी सर्विस में काम करते थे। योग्यता और प्रतिभा के अनुसार अपने वेतन में कई ज़ीरो जोड़ सकते थे। एक दिन उन्हें महसूस हुआ कि बच्चे मैथमैटिक्स से डरते हैं। 2011 में अभिषेक और उनके मित्र आठ युवा पेशेवरों ने अपने भारी भरकम वेतन पैकेज ठुकरा दिए। एक अजूबा उन्होंने खोजा। वे बच्चों को क्रिकेट खिलाते हैं और रनों की कवायद के जरिये उन्हें जोड़ना और घटाना सिखाते हैं। लट्टू घुमाकर रेखागणित के कठिन सिद्धांत उन्हें सिखाते हैं। धनबाद के एक स्कूल से शुरू हुआ उनका यह अनूठा सेवा प्रकल्प, 500 सरकारी स्कूलों में फैल गया है। आदिवासी और अल्पसंख्यक समुदाय के बच्चों को गणित और रेखागणित सिखाने के लिए उन्होंने गिल्ली डंडे का सहारा लिया। उनका यह प्रयोग इतना लोकप्रिय हो गया कि अब वे मैथमैटिक्स सिखाने की पद्धति का प्रशिक्षण सरकारी स्कूलों में भी दे रहे हैं। शिक्षकों को भी प्रशिक्षित कर रहे हैं। स्कूलों में अतिरिक्त कक्षाएं लगने लगी हैं। अभिषेक और उनकी टीम को प्रायोजक भी मिलने लगे हैं। जैसे मैथोन पावर लिमिटेड ने इस टीम को आर्थिक मदद देना शुरू किया है, कमज़ोर तबकों के बच्चों के लिए। अनूठापन यह है कि उन्होंने शिक्षण के लिये मैथमैटिक्स जैसे कठिन लगने वाले विषय को उन चीज़ों से जोड़ा जो बिल्कुल आम खेल हैं। जैसे, क्रिकेट और गिल्ली डंडा।⁵

तमाम लोग ऐसे हैं जो कोर्ट कचहरी के नाम से डरते हैं। अन्याय सहते हैं पर न्याय की मांग नहीं कर पाते। कहीं साहस का अभाव है तो कहीं साधन का। इलाहाबाद के ह्यूमन लॉ नेटवर्क से जुड़े लॉ इंटरन अख़बार की ख़बरों से पीड़ितों की तलाश करते हैं और उनके घर पहुंचकर उन्हें उनके अधिकारों से अवगत करा कर न्याय के लिए उनकी जंग कानून की किताबों से लड़ते हैं। उनकी कार्यपद्धति सार्थक है, सफल है, सेवाजनित है। ये इंटरन इलाहाबाद में 'सोशल जांबाज' के नाम से जाने जाने लगे हैं।⁶

हरियाणा में भिवानी के जिला डाकघर के कर्मचारियों ने अपने ही स्तर पर जनहित में एक योजना शुरू की है। वे लोगों को खोई हुई चीज़ें मिलने पर डाकघर में जमा कराने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। कागज़ों से उनका फोन नंबर या पता तलाशने की कोशिश करते हैं जो निश्चित हो जाने पर इस डाकघर के पोस्टमैन वे वस्तुएं उनके मालिक के पास डाक बांटते समय पहुंचाकर आते हैं। अपनी खोई हुई कीमती वस्तुएं या कागजात जिसमें ड्राइविंग लाइसेंस, प्रमाण पत्र, क्रेडिट कार्ड भी शामिल हैं, पाकर जितनी प्रसन्नता होती है उसका अनुमान लगाया जा सकता है। इस

⁵ (दैनिक भास्कर 19.12.2013, मैनेजमेंट फंडा, एन. रघुरामन)

⁶ (दैनिक भास्कर 19.12.2013)

योजना के लिए न तो कोई सरकारी निर्देश हैं और न कोई प्रचार। कर्मचारियों ने यह काम अपनी मर्जी से और लोगों की सुविधा के लिए स्वयं-सेवा भावना से शुरू किया है। वे इस सेवा के लिए कोई शुल्क नहीं लेते।

उक्त उदाहरण मैंने केवल यह दर्शाने के लिए दिये हैं कि सेवा अनन्त रूपों में हो सकती है। सेवा-प्रकल्प अनूठे और ताजगी भरे हो सकते हैं।

सेवा से मिलती है मेवा

एक कहावत है— जो करेगा सेवा, सो पाएगा मेवा। सेवा के कुछ लाभ हैं। कुछ देर पहले मैंने कहा था कि लोक कल्याण और परोपकार नामक उद्योगों का बाइप्रोडक्ट आपके अपने व्यक्तित्व को भी सुशोभित करता है, संपन्न बनाता है। रहीम ने कहा है— “यों रहीम सुख होत है उपकारी के संग। बांटन वारे को लगे ज्यों मेंहदी को रंग।।” कम से कम आठ फायदे⁷ तो हैं — जो सेवा करने वाले अथवा परोपकारी को स्वयं को होते हैं। वे हैं :—

1. आप दूसरों की मदद करते हैं तो लोग आपको चाहने लगते हैं। पुरानी कहावत है— **Be a friend to have a friend.**
2. परोपकार का भाव आत्मविश्वास एवं सकारात्मक सोच जगाता है। जब किसी का भला होता है तो हमें स्वयं अच्छा लगता है। लगने लगता है कि हम किसी के लिए कुछ करने के योग्य हैं।
3. एक भी सुकर्म करने से प्राप्त मानसिक सुख यह भाव जगाता है कि मैं भी एक नेक इंसान हूँ। व्यक्ति में चारित्रिक दृढ़ता आती है।
4. चाहे दान दें या सेवा करें, किसी भी रूप में परोपकार करें, ऐसा लगने लगता है कि समाज के लिए मेरा जीवन उपयोगी है। कर्मठ सेवाभावी व्यक्ति अपराधबोध और कुंठा से मुक्त रहता है, आत्मविश्वास और उल्लास से भरा होता है।
5. आप सेवा इस भाव से नहीं करते कि कोई आपसे उपकृत अनुभव करे या आपका ऋणी रहे किंतु विश्वास रखिए कि (ईश्वर न करे) कभी कोई विपदा आपको आ घरे तो आप पाएंगे कि शुभचिंतकों और सेवाभावी स्वयं सेवकों की एक भीड़ आपके आस-पास जमा हो गई है।
6. आपकी छुपी हुई प्रतिभा निखरती है। जरूरतमंद की मदद करने के लिए आप अपनी शक्ति, साधन, क्षमता और बुद्धिमत्ता का प्रयोग करते हैं और तब आप जान जाते हैं कि यह सब आपके पास भी है।
7. सेवा से संबंध प्रगाढ़ होते हैं। मनुष्य और मनुष्य के बीच की दूरियां कम होती हैं, निकटता बढ़ती है।

⁷ E&W Series, Dec'13, pp. 12-13 में प्रकाशित एक लेख पर आधारित

8. सेवा भावी व्यक्ति निर्भय-निर्भीक हो जाता है। निन्दा, आलोचना, असफलता का भय जैसी बातें न तो उसे हतोत्साहित कर सकती हैं न ही पराजित। स्वार्थी व्यक्ति भीरु होता है।

सेवा का एक नौवां लाभ और भी है। जो सेवा करता है वह स्वस्थ रहता है। आप कहेंगे कि सेवा और स्वास्थ्य का क्या संबंध? मैं कहूंगा कि संबंध है। John Andrews Holmes ने कहा है – “There is no better exercise for the heart than reaching down and lifting somebody up” everyday. एक लाकोक्ति है— When you help others, you help yourself as well.⁸ सेवा करना मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य—दोनों के लिए लाभकारी है।

उपसंहार

सारांश यह है कि सेवा आनन्द का स्रोत है; व्यक्ति के विकास का मार्ग है; मुक्ति और मोक्ष प्रदाता है। सेवा यदि स्वभाव बन जाए तो साधना का रूप ले लेती है।

अपने वक्तव्य का समापन एक मुक्तक की चार पंक्तियों के साथ करने की अनुमति दीजिए। इन पंक्तियों में सम्मैत्री है, कठिनाईयों से जूझने का इरादा है, वसुधैव कुटुम्बकम् का भाव है, और व्यक्तित्व की उदात्ता की आश्वस्ति भी। दूसरे शब्दों में, ये चार पंक्तियां आज के इस वक्तव्य का सारांश भी हैं और आपसे अपेक्षित संकल्प भी। हम में से प्रत्येक इस कान्फ्रेन्स से मन ही मन यह निश्चय करके प्रस्थान करे कि —

सबके दिल में प्यार का अरमान बन कर जी सकूँ
मुश्किलों में भी कभी आसान बन कर जी सकूँ
मुझसे मेरी जात, मजहब, नाम सब कुछ छीन लो
जिससे मैं इंसान, बस इंसान, बन कर जी सकूँ।।

⁸ (भारत विकास की पत्रिका— नीति, अगस्त 2007)